रेस का घोड़ा

अलका प्रमोद

रेस का घोड़ा

अलका प्रमोद

प्रिय मित्र
डॉ॰ अमिता दुबे को

कुछ अपनी

संसार में चारों ओर घटित अघटित सबके परोक्ष में कहीं न कहीं एक कहानी छिपी रहती है और गाहे बगाहे जब लेखक की अन्तर्दृष्टि उस पर पड़ जाती है तो उसकी लेखनी उसे कल्पना से रंग कर कहानी बना देती है।

कहानी की राह से लेखक की संवेदनाओं का संप्रेषण पाठक तक पहुंच जाए तो वही लेखक की रचनाशीलता की सफलता है। कहानी की कहानी युगों पुरानी है, स्वाभाविक है कि समय की धारा में बहते हुए हर युग के समाज के अनुसार उसने स्वयं को ढाला है। समय गतिशील है, समाज परिवर्तनशील है तो कहानी के द्वारा नये-नये रूप अपनाना अपेक्षित ही है, पर एक तथ्य तो निश्चित है कि कहानीकार का महत्ती दायित्व और कहानी का सर्वप्रथम उद्देश्य समाज के हित में होना अवश्यंभावी है।

किसी भी वाद से परे मेरा उद्देश्य अपनी अनुभूतियों को कल्पना के ताने-बाने बुन कर कहानी के रूप में रचना है। मेरा प्रयास समाज के प्रति अपने दायित्व को प्रायः आते अंधड़ के थपेड़ों से बचाए रखने का है जिससे कितना भी अंधेरा क्यों न छाये, आशा की किरण चमकती रहे। मुझे अपने अति सूक्ष्म से प्रयास में कितनी सफलता मिलती है यह तो सामाजिक अर्थात कि पाठक ही तय कर पायेंगे।

अंतिम कथ्य मैं बार-बार दोहराती रही हूं, परन्तु उससे उसकी आवश्यकता तथा महत्ता कहीं से भी कम नहीं होती, क्योंकि यह शाश्वत सत्य है कि मैं आज जिस स्थान पर भी हूं उसका सम्पूर्ण श्रेय मेरे साहित्यकार पापा श्री कृष्णेश्वर डींगर एवं साहित्य की ही प्राध्यापिका रही मेरी मां श्रीमती संतोष डींगर को है, जो आज भी मेरा मार्गदर्शन करते रहते हैं और कहना न होगा कि जीवन सहचर श्री प्रमोदकुमार पाण्डेय के सहयोग ने मेरे लेखन की राह को जो सम्बल प्रदान किया है उसी की डोर थामे मैं इस राह पर अग्रसर हूं।

गद्य लेखन को समर्पित संस्था "अभिव्यक्ति" जिससे मैं वर्षों से जुड़ी हूं, की अध्यक्षा डॉ॰ शान्ति देव बाला, तथा अन्य वरिष्ठ लेखिकाएं डॉ॰ उषा चौधरी, हेमलता मिश्र, शारदा लाल, सुषमा श्रीवास्तव, शशि जैन , स्व॰ शीला मिश्र, आदि ने समय-समय पर समालोचना से मेरी लेखनी को जो धार दी है उसके लिये मैं आप सभी की आभारी हूं।

मेरे चार कहानी संग्रह 'सच क्या था', 'धूप का टुकड़ा', 'समान्तर रेखाएं' तथा 'स्वयं के घेरे' के पश्चात, अठ्ारह कहानियों का यह मेरा पांचवां संग्रह "रेस का घोड़ा", सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत होने को आतुर है, सामाजिक उसको पढ़े! समझें! आप सभी पाठकों का निर्णय सिर माथे पर।

5/41 विराम खण्ड, गोमती नगर
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

— अलका प्रमोद

कहानी–क्रम

7 ❐ आस्था
14 ❐ झुमकी की मौत
22 ❐ बात में लाजिक है
28 ❐ आत्मविश्वास
33 ❐ एक प्रश्न
36 ❐ वापसी
43 ❐ खोज जारी है
50 ❐ नींव
54 ❐ दीवार ढह गयी
59 ❐ पालतू
65 ❐ द्वन्द्व
73 ❐ प्रहेलिका
80 ❐ दो किनारे
88 ❐ शब्द नहीं
92 ❐ मानवता का दर्द
97 ❐ माँ
103 ❐ नेताजी की जय
109 ❐ रेस का घोड़ा

आस्था

वत्सला प्रातः उठ कर अपने साथ मायके से लायी ईश्वर की मूर्ति को कमरे में स्थापित कर पूजा और आरती करने लगी। आरती की ध्वनि सुनकर सुनन्दा जी कमरे में आयीं और कठोर वाणी में बोलीं—"आज के बाद इस घर में पूजा और आरती की आवाज़ सुनायी न पड़े।"

वत्सला हतप्रभ रह गयी, उसे समझ नहीं आया कि उसने क्या अपराध कर दिया कि मम्मी जी कुपित हो गयीं। उसने सात्विक से पूछा, पहले तो वो टाल-मटोल करता रहा पर फिर जब वत्सला रूठ कर बैठ गयी तो नई नवेली पत्नी से वह उस रहस्य को छिपा नहीं पाया, उसने उस पर से वर्षों से गिरा पर्दा उठा ही दिया, उसने बताया...

इस घर का बड़ा बेटा सृजन परिवार में सबकी आशाओं का केन्द्र था, उनके गर्व का कारण था, होता भी क्यों न, मम्मा हों या पापा, छोटा भाई हो या दीदी उसे सब की चिंता रहती थी। मम्मा के सिर में दर्द हो तो किसी का ध्यान भले ही न जाये, सृजन तुरंत ही चाय बना कर मां के सामने उपस्थित हो जाता और कहता—"मम्मा काम बाद में पहले चाय पी कर थोड़ी देर आराम कर लो!"

मम्मा सुखद आश्चर्य से भर जातीं और पूछतीं—"तुझे कैसे पता चल जाता है सोना, मैंने तो कहा नहीं!"

वह मुस्करा देता बस, कम बोलना उसकी प्रकृति थी, पता ही नहीं चलता उसके मन में क्या चल रहा है, वह क्या सोच रहा है पर उसे सब पता रहता था कि क्या समस्या है, किसको उसकी आवश्यकता है। मम्मा के तो हृदय का टुकड़ा था वो। आज के युग में बच्चे अपने पैरों पर खड़े होते ही अपना संसार स्वयं ही रच लेते हैं और उसमें इतना मदहोश हो जाते हैं कि अपने निज के रिश्तों को ही विस्मृत कर देते हैं। सृजन के लिये दूसरों का दुख सदा निज आकांक्षाओं पर भारी था।

जब वह चार वर्ष की इंजीनियरिंग की डिग्री ले कर वापस आ रहा था तो सुनन्दा की प्रसन्नता का पारावार नहीं था। एक तो उनका बेटा घर आ रहा था और सोने पर सुहागा ये कि वो इंजीनियर बन कर आ रहा था। सुनन्दा ने रवि से कहा—"सुनिये सृजन को जॉब मिलते ही हम उसकी शादी की बात करेंगे।"

फिर रहस्योद्घाटन करती हुई बोलीं—"आपको पता है आज कल सविता मुझे कुछ ज्यादा ही भाव देने लगी है।"

"तो"? रवि ने कुछ न समझते हुए पूछा।

"अरे आप तो बस..." उसे अपने पति की अव्यवहारिक बुद्धि पर तरस आया।

उसने सोचा अपने आफिस में भले ही वे बड़े-बड़े निर्णय लेते हों पर दुनियादारी का पाठ अभी तक नहीं पढ़ पाये हैं। उसने रहस्य पर से पर्दा उठाते हुए कहा–"अरे अपना बेटा शादी लायक हो गया है, उनकी बेटी मान्या को इससे अच्छा वर कहां मिलेगा।"

रवि ने हंसते हुए कहा–"ख्याली पुलाव पकाने में तुम्हारा जवाब नहीं, अभी तो सृजन अपनी अंतिम परीक्षा दे कर आया है, उसे नौकरी तो मिलने दो।"

अपनी कल्पना की उड़ान में पड़ने वाले व्यवधान ने सुनन्दा के मुंह का स्वाद कसैला कर दिया, उसने चिढ़ कर कहा–"जब चार साल पता नहीं चले तो कुछ महीने तो यूं ही उड़ जाएंगे।"

"क्या पता अभी सृजन एम॰बी॰ए॰ क़रना चाहे।" रवि ने कहा।

"हां यह तो है!" सुनन्दा की प्रसन्नता के बुलबुले एक-एक करके बैठने लगे थे। उसने यह तो सोचा ही न था। पर कुछ भी हो वह सृजन से कहेगी कि यदि उसने कोई लड़की पसन्द कर ली हो तो ठीक है अन्यथा उसे तो मान्या पसन्द है, बचपन से देखी हुई है, सुन्दर है, फिर मिस्टर रहेजा का अच्छा खासा व्यापार है, मान्या उनकी अकेली बेटी है। मैं तो कहूंगी कि नौकरी-वौकरी का चक्कर छोड़ो! मान्या से शादी कर लो! मिस्टर रहेजा का व्यापार संभालो। बेटे के बहाने उनके दिन भी संवर जाएंगे। अभी तो वह न जाने किन-किन सतरंगी सपनों की गलियों में भटकती कि रवि ने आ कर कहा–"सुनन्दा ट्रेन का समय तो निकल गया, सृजन आया नहीं!"

सुनन्दा चौंकी! अपनी कल्पनाओं में खोई उसे ध्यान ही नहीं रहा कि कितना समय हो गया। उसने व्यग्र हो कर कहा–"फोन करके पूछिये ट्रेन लेट तो नहीं है।"

रवि ने कहा–"मैं पहले ही पूछ चुका हूं अब तो गाड़ी को आये भी एक घंटा हो गया है।" फिर चिन्तातुर हो कर बोले–"सृजन का मोबाइल भी स्विच आफ आ रहा है।"

सुनन्दा ने घबरा कर कहा–"पर कल तो उसने कहा था कि रात को चल कर सुबह पहुंच जाऊंगा, भोपाल फोन करिये, वो वहां चला भी कि नहीं, कहीं बीमार तो नहीं पड़ गया मेरा बच्चा।"

रवि ने कहा–"मैं सब कर चुका हूं, वो कल रात में चल दिया था।"

फिर सुनन्दा का श्वेत पड़ता चेहरा देख कर सुनन्दा और स्वयं को कुछ समझाते हुए बोले–"अरे जानती तो हो उसे अपना ध्यान कहां रहता है, मोबाइल चार्ज नहीं किया होगा और दिल्ली का ट्रैफिक तो माशाअल्लाह है, फंस गया होगा कहीं जाम में।"

दोनों मनोतियां मना रहे थे कि यही सच हो। पर घड़ी की निरंतर आगे बढ़ती निष्ठुर सुइयां उनकी सोच को झुठलाने की ठाने बैठी थीं ।

समय के साथ-साथ उनकी आशा को अनहोनी की आकांक्षा के काले बादल ढंकते चले जा रहे थे। पल-पल करके घंटे और दिन बीत गये। हर जगह पता किया, सृजन के जानने वाले हर व्यक्ति को फोन किया पर कहीं से कोई सुराग नहीं मिल रहा था।

कुछ अघटित का भय सुरसा सा मुंह फैलाता ही जा रहा था।

सृजन के घर न आने का समाचार आस-पास के परिचितों में आग के समान फैल गया और लोग आग सेंकने से बाज न आये। जितने मुंह उतनी ही बातें...कोई कहता किसी लड़की के चक्कर में पड़ गया होगा! आज कल तो ये आम बात है! उसी के किसी प्रतिद्वन्दी ने ठिकाने लगा दिया होगा। कोई कहता लूट का चक्कर होगा।

अन्त में दो दिन व्यतीत होने के बाद सभी ने यही राय दी कि पुलिस की सहायता ली जाये। रवि ने वह सब भी किया पर कोई पता नहीं चला। बीतते दिनों के साथ उनकी आशा की किरण धूमिल पड़ने लगी थी।

एक दिन रवि को कूरियर से एक पत्र मिला, उसमें लिखा था—"आपका बेटा जीवित है।" उनके हृदय में आशा की बुझती लौ को मानो तेल मिल गया। उन्होंने ईश्वर को हाथ जोड़ कर धन्यवाद दिया और सुनन्दा को यह समाचार दिया। वह तुरंत भगवान जी के पैरों पर सिर नवाने दौड़ी। पर संभवतः ईश्वर को धन्यवाद देने में दोनों ने कुछ जल्दबाजी दिखा दी थी। आगे के समाचार ने उनके मन में सृजन के जीवित रहने की पुष्टि तो कर दी पर आगे जो लिखा था वह कोई कम बड़ा आघात न था। उसमें लिखा था कि उनका बेटा—'योगी आश्रम' में है और उसने आश्रम में दीक्षा ले ली है।

सुनन्दा बोली—"यह किसी ने झूठ लिखा है। अरे मेरे सृजन ने मुझसे फोन पर बात करके आने को कहा था और अचानक उसने आश्रम में दीक्षा ले ली, ये नहीं हो सकता।"

"अरे उसका दीक्षा लेने का मन होता तो कभी तो हमसे जिक्र किया होता वो तो हमको अपने मन की हर बात बताता था।"

"अब तो सच वहां जाकर ही पता चलेगा सुनन्दा!" रवि ने चिन्तातुर वाणी में कहा।

आश्रम के द्वार पर ही सुनन्दा रवि, उनके साथ आये सृजन के मामा श्रीकान्त और रवि के अभिन्न मित्र विकास को रोक दिया गया। रवि ने वह पत्र दिखाया जिसमें लिखा था कि उनके हृदय के टुकड़े सृजन ने आश्रम में दीक्षा ले ली है।

वहां स्वामी जी के कुछ शिष्य थे। उन्होंने उनके आने का उद्देश्य पूछा।

सुनन्दा ने कहा—"हम अपने बेटे को लेने आये हैं।"

इस पर वहां का मुख्य कार्यकर्ता अखिलानन्द बोला—"पर उन्होंने दीक्षा ले ली है अब वह आपके बेटे नहीं हैं, बल्कि यहां के दीक्षित प्रशिक्षु हैं कुछ समय बाद वो एक संत की उपाधि पा जाएंगे।"

यह सुन कर सुनन्दा व्यग्र हो गई। उसने कहा—"ऐसे कैसे आप मेरे बेटे को मुझसे छीन सकते हैं, आप कौन होते हैं ये कहने वाले कि वो मेरा बेटा नहीं है।"

रवि ने कहा—"वो एक पढ़ा लिखा इंजीनियर है। अभी तो उसे अपना कैरियर बनाना है। उसकी अभी कोई आयु है दीक्षा लेने की।"